Job

Chapter 28

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	כִּי	יֵשׁ	לַכֶּסֶף	מוֹצָא	וּמָקוֹם	לַזָּהָב	יָזֹקּוּ׃
	क्योंकि	है	चाँदी-के-लिए	खदान	और-स्थान	सोने-के-लिए	वे-शुद्ध-करते-हैं
		H3426	H3701	H4161	H4725	H2091	H2212

"वहाँ चाँदी की खान है जहाँ लोग चाँदी पाते है, वहाँ ऐसे स्थान है जहाँ लोग सोना पिघला करके उसे शुद्ध करते हैं।

2	בַּרְזֶל	מֵעָפָר	יֻקַּח	וְאֶבֶן	יָצוּק	נְחוּשָׁה׃
	लोहा	धूल-से	लिया-जाता-है	और-पत्थर	ढाला-जाता-है	काँसा
	H1270	H6083	H3947	H0068	H6694	H5154

लोग धरती से खोद कर लोहा निकालते है, और चट्टानों से पिघला कर ताँबा निकालते हैं।

3	וְקֵץ	שָׂם	לַחֹשֶׁךְ	וּלְכָל־	תַּכְלִית	הוּא	יַחְקֹר	אֶבֶן	אֹפֶל
	सीमा	वह-रखता-है	अंधकार-के-लिए	और-सब	समाप्ति	वह	खोजता-है	पत्थर	घोर-अंधकार-का
	H7093			H3605	H8503	H1931	H2713	H0068	H0652

וְצַלְמָוֶת׃
और-मृत्यु-छाया-का
H6757

लोग गुफाओं में प्रकाश को लाते हैं वे गुफाओं की गहराई में खोजा करते हैं, गहरे अन्धेरे में वे खनिज की चट्टानें खोजते हैं।

4	פָּרַץ	וְנַחַל	מֵעִם־	גָּר	הַנִּשְׁכָּחִים	מִנִּי־	רֶגֶל	דָּלוּ	נָעוּ׃
	वह-तोड़ता-है	नदी	दूर-से	परदेशी	भूले-हुए	पैर-से	पैर	वे-लटकते-हैं	वे-हिलते-हैं
	H6555				H7911		H7272	H1809	H5128

जहाँ लोग रहते है उससे बहुत दूर लोग गहरे गढ़े खोदा करते हैं कभी किसी और ने इन गढ़ों को नहीं छुआ। जब व्यक्ति गहन गर्तो में रस्से से लटकता है, तो वह दूसरों से बहुत दूर होता है।

5	אֶרֶץ	מִמֶּנָּה	יֵצֵא־	לֶחֶם	וְתַחְתֶּיהָ	נֶהְפָּךְ	כְּמוֹ־	אֵשׁ׃
	पृथ्वी	उससे	निकलती-है	रोटी	और-उसके-नीचे	पलटी-है	जैसे	आग
	H0776		H3318	H3899	H8478	H2015	H3644	H0784

भोजन धरती की सतह से मिला करता है, किन्तु धरती के भीतर वह बढ़त जाया करता है जैसे आग वस्तुओं को बदल देती है।

6	מְקוֹם־	סַפִּיר	עֲפָרֹת	אַבְנֶיהָ	זָהָב	לוֹ׃
	स्थान	नीलम	और-धूल	उसके-पत्थर	सोने-की	उसके-लिए
	H4725	H5601	H6083	H0068	H2091	

धरती के भीतर चट्टानों के नीचे नीलम मिल जाते हैं, और धरती के नीचे मिट्टी अपने आप में सोना रखती है।

7	נָתִיב	לֹא־	יְדָעוֹ	עַיִט	וְלֹא	שְׁזָפַתּוּ	עֵין	אָיָה׃
	पगडंडी	नहीं	जानता	गिद्ध	और-नहीं	देखी	आँख	चील-की
		H3808	H3045	H5861	H3808	H7805		H0344

जंगल के पक्षी धरती के नीचे की राहें नहीं जानते हैं न ही कोई बाज यह मार्ग देखता है।

8	לֹא־	הִדְרִיכֻהוּ	בְנֵי־	שַׁחַץ	לֹא־	עָדָהּ	עָלָיו	שָׁחַל׃
	नहीं	उस-पर-चली	पुत्र	घमंड-के	नहीं	गुज़रा	उस-पर	शेर
	H3808	H1869		H7830	H3808			H7826

इस राह पर हिंसक पशु नहीं चले, कभी सिंह इस राह पर नहीं विचरे।

9

בְּחַלָּמִישׁ	שָׁלַח	יָדוֹ	הָפַךְ	מִשֹּׁרֶשׁ	הָרִים׃
चकमक-पत्थर-पर	वह-बढ़ाता-है	अपना-हाथ	वह-पलटता-है	जड़-से	पहाड़ों-को
H2496	H7971	H3027	H2015	H8328	H2022

मजदूर कठिन चट्टानों को खोदते हैं और पहाड़ों को वे खोद कर जड़ से साफ कर देते हैं।

10

בַּצּוּרוֹת	יְאֹרִים	בִּקֵּעַ	וְכָל־	יְקָר	רָאֲתָה	עֵינוֹ׃
चट्टानों-में	नाले	वह-चीरता-है	और-सब	बहुमूल्य	देखती-है	उसकी-आँख
H6697	H2975	H1234	H3605	H3366	H7200	

काम करने वाले सुरंगे काटते हैं, वे चट्टान के खजाने को चट्टानों के भीतर देख लिया करते हैं।

11

מִבְּכִי	נְהָרוֹת	חִבֵּשׁ	וְתַעֲלֻמָהּ	יֹצִא	אוֹר׃	פ
बहने-से	नदियों-को	वह-बाँधता-है	और-छिपी-हुई-चीज़	वह-निकालता-है	ज्योति-में	—
H1065	H5104	H2280	H8587	H3318	H0216	

काम करने वाले बाँध बाँधा करते हैं कि पानी कहीं ऊपर से होकर न वह जाये। वे छुपी हुई वस्तुओं को ऊपर प्रकाश में लाते हैं।

12

וְהַחָכְמָה	מֵאַיִן	תִּמָּצֵא	וְאֵי	זֶה	מְקוֹם	בִּינָה׃
और-बुद्धि	कहाँ-से	पाई-जाएगी	और-कहाँ	यह	स्थान	समझ-का
H2451	H0370	H4672	H0335	H2088	H4725	H0998

“किन्तु कोई व्यक्ति विवेक कहाँ पा सकता है और हम कहाँ जा सकते हैं समझ पाने को

13

לֹא־	יָדַע	אֱנוֹשׁ	עֶרְכָּהּ	וְלֹא	תִמָּצֵא	בְּאֶרֶץ	הַחַיִּים׃
नहीं	जानता	मनुष्य	उसका-मूल्य	और-नहीं	पाई-जाती	पृथ्वी-में	जीवितों-की
H3808	H3045	H0582	H6187	H3808	H4672	H0776	

ज्ञान कहाँ रहता है लोग नहीं जानते हैं, लोग जो धरती पर रहते हैं, उनमें विवेक नहीं रहता है।

14

תְּהוֹם	אָמַר	לֹא	בִי־	הִיא	וְיָם	אָמַר	אֵין	עִמָּדִי׃
गहराई	कहती-है	नहीं	मुझ-में	वह	और-समुद्र	कहता-है	नहीं-है	मेरे-साथ
H8415	H0559	H3808		H1931	H3220	H0559	H0369	H5978

सागर की गहराई कहती है, ‘मुझ में विवेक नहीं।’ और समुद्र कहता है, ‘यहाँ मुझ में ज्ञान नहीं है।’

15

לֹא־	יֻתַּן	סְגוֹר	תַּחְתֶּיהָ	וְלֹא	יִשָּׁקֵל	כֶּסֶף	מְחִירָהּ׃
नहीं	दिया-जाएगा	शुद्ध-सोना	उसके-बदले-में	और-नहीं	तौली-जाएगी	चाँदी	उसका-दाम
H3808	H5414	H5458	H8478	H3808	H8254	H3701	H4242

विवेक को अति मूल्यवान सोना भी मोल नहीं ले सकता है, विवेक का मूल्य चाँदी से नहीं गिना जा सकता है।

16

לֹא־	תְסֻלֶּה	בְּכֶתֶם	אוֹפִיר	בְּשֹׁהַם	יָקָר	וְסַפִּיר׃
नहीं	तौली-जाएगी	शुद्ध-सोने-से	ओपीर-के	गोमेद-से	बहुमूल्य	और-नीलम
H3808		H3800	H0211	H7718	H3368	H5601

विवेक ओपीर देश के सोने से अथवा मूल्यवान स्फटिक से अथवा नीलमणियों से नहीं खरीदा जा सकता है।

17

לֹא־	יַעַרְכֶנָּה	זָהָב	וּזְכוֹכִית	וּתְמוּרָתָהּ	כְּלִי־	פָז׃
नहीं	उसकी-बराबरी-होगी	सोना	और-काँच	और-उसका-विनिमय	बर्तन	शुद्ध-सोने-के
H3808		H2091	H2137	H8545	H3627	H6337

विवेक सोने और स्फटिक से अधिक मूल्यवान है, कोई व्यक्ति अति मूल्यवान सुवर्ण जड़ित रत्नों से विवेक नहीं खरीद सकता है।

18

רָאמוֹת	וְגָבִישׁ	לֹא	יִזָּכֵר	וּמֶשֶׁךְ	חָכְמָה	מִפְּנִינִים׃
मूँगा	और-स्फटिक	नहीं	याद-किया-जाएगा	और-कीमत	बुद्धि-की	मोतियों-से-अधिक
H7215	H1378	H3808	H2142	H4901	H2451	H6443

विवेक मूंगे और सूर्यकांत मणि से अति मूल्यवान है। विवेक मानक मणियों से अधिक महंगा है।

19

לֹא־	יַֽעַרְכֶנָּה	פִּטְדַת־	כּוּשׁ	בְּכֶתֶם	טָהוֹר	לֹא	תְסֻלֶּה׃	פ
नहीं	उसकी-बराबरी-होगी	पुखराज	कूश-का	शुद्ध-सोने-से	शुद्ध	नहीं	तौली-जाएगी	—
H3808		H6357		H3800	H2889	H3808		

जितना उत्तम विवेक है कूश देश का पदमराग भी उतना उत्तम नहीं है। विवेक को तुम कुन्दन से मोल नहीं ले सकते हो।

20

וְֽהַחָכְמָה	מֵאַיִן	תָּבוֹא	וְאֵי	זֶה	מְקוֹם	בִּינָה׃
और-बुद्धि	कहाँ-से	आएगी	और-कहाँ	यह	स्थान	समझ-का
H2451	H0370	H0935	H0335	H2088	H4725	H0998

“तो फिर हम कहाँ विवेक को पाने जायें हम कहाँ समझ सीखने जायें

21

וְֽנֶעֶלְמָה	מֵעֵינֵי	כָל־	חָי	וּמֵעוֹף	הַשָּׁמַיִם	נִסְתָּרָה׃
और-छिपी-है	आँखों-से	सब	जीवित-की	और-पक्षियों-से	आकाश-के	छिपी-है
H5956		H3605		H5775	H8064	H5641

विवेक धरती के हर व्यक्ति से छुपा हुआ है। यहाँ तक की ऊँचे आकाश के पक्षी भी विवेक को नहीं देख पाते हैं।

22

אֲבַדּוֹן	וָמָוֶת	אָמְרוּ	בְּאָזְנֵינוּ	שָׁמַעְנוּ	שִׁמְעָהּ׃
विनाश	और-मृत्यु	कहते-हैं	हमारे-कानों-से	हमने-सुना	उसकी-खबर
H0011	H4194	H0559	H0241	H8085	

मृत्यु और विनाश कहा करते है कि हमने तो बस विवेक की बाते सुनी हैं।

23

אֱלֹהִים	הֵבִין	דַּרְכָּהּ	וְהוּא	יָדַע	אֶת־	מְקוֹמָהּ׃
ईश्वर	समझता-है	उसका-मार्ग	और-वह	जानता-है	उसका-स्थान	उसका-स्थान
H0430	H0995	H1870	H1931	H3045	H0853	H4725

“किन्तु बस परमेश्वर विवेक तक पहुँचने की राह को जानता है। परमेश्वर जानता है विवेक कहाँ रहता है।

24

כִּי־	הוּא	לִקְצוֹת־	הָאָרֶץ	יַבִּיט	תַּחַת	כָּל־	הַשָּׁמַיִם	יִרְאֶה׃
क्योंकि	वह	छोरों-तक	पृथ्वी-के	देखता-है	नीचे	सब	आकाश-के	वह-देखता-है
	H1931	H7098	H0776	H5027	H8478	H3605	H8064	H7200

परमेश्वर विवेक को जानता है क्योंकि वह धरती के आखिरी छोर तक देखा करता है। परमेश्वर हर उस वस्तु को जो आकाश के नीचे है देखा करता है।

25

לַעֲשׂוֹת	לָרוּחַ	מִשְׁקָל	וּמַיִם	תִּכֵּן	בְּמִדָּה׃
बनाने-के-लिए	हवा-के-लिए	भार	और-पानी	वह-निर्धारित-करता-है	माप-से
	H7307	H4948	H4325	H8505	

जब परमेश्वर ने पवन को उसकी शक्ति प्रदान की और यह निश्चित किया कि समुद्रों को कितना बड़ा बनाना है।

26

בַּעֲשֹׂתוֹ	לַמָּטָר	חֹק	וְדֶרֶךְ	לַחֲזִיז	קֹלוֹת׃
जब-वह-बनाता-है	वर्षा-के-लिए	नियम	और-मार्ग	बिजली-की-गर्जन-के-लिए	गर्जना
	H4306	H2706	H1870	H2385	

और जब परमेश्वर ने निश्चय किया कि उसे कहाँ वर्षा को भेजना है, और बवण्डरों को कहाँ की यात्रा करनी है।

27

אָז	רָאָהּ	וַיְסַפְּרָהּ	הֱכִינָהּ	וְגַם־	חֲקָרָהּ׃
तब	उसने-देखी	और-उसने-वर्णन-किया	उसने-स्थापित-किया	और-भी	उसने-खोजी
	H7200			H1571	H2713

तब परमेश्वर ने विवेक को देखा था, और उसको यह देखने के लिये परखा था कि विवेक का कितना मूल्य है, तब परमेश्वर ने विवेक का समर्थन किया था।

28

וַיֹּאמֶר	לָֽאָדָם	הֵן	יִרְאַת	אֲדֹנָי	הִיא	חָכְמָה	וְסוּר	מֵרָע	בִּינָה׃	ס
और-वह-कहता-है	आदमी-से	देखो	भय	प्रभु-का	वह	बुद्धि	और-दूर-हटना	बुराई-से	समझ	—
H0559	H0120	H2005	H3374	H0136	H1931	H2451	H5493		H0998	

और लोगों से परमेश्वर ने कहा था कि ‘यहोवा का भय मानो और उसको आदर दो। बुराईयों से मुख मोड़ना ही विवेक है, यही समझदारी है।’”